स्नातक प्रथम खण्ड

अतीत (कथा संग्रह)

उमानाथ झा एवं हुनक अन्यान्य कृतिक सामान्य परिचय

उमानाथ झा कें मनोवैज्ञानिक कथाकार मानल गेल छनि। मानवक सदाः परिवर्तनशील मनःस्थितिक अवलोकन हिनक कथाक माध्यमे कएल जा सकैत अछि। एहि कथा संग्रहक प्रकाशकीय मे डॉ० मदनेश्वर मिश्रक अति हिनक रचनाधर्मिताक प्रसंग आ ओहि लेखी स्पष्ट करैत अछि - मनोवैज्ञानिक विश्लेषण सँ मनश्चेतनाक अन्तराल सँ प्रवाहित धारा तथा पूर्वदीप्ति इत्यादि जे नवीन तकनीक कहबैछ तकर प्रयोग समस्त पहिने इएह मैथिली कथामे कएलनि। उमानाथ बाबूक कथा चिन्तन प्रधान एवं दार्शनिक कोटिक होइछ। जाहिमे परम्परागत तथा तत्व जेना कथानक, चरित्र-चित्रण एवं घटनाक लोप जकाँ भऽ जाइत अछि। मनोविश्लेषणक एहि तरहक प्रभावी प्रयोग आइ तक आन किओ कथाकार मैथिली मे नहि कऽ सकलाह अछि।

उमानाथ झा मैथिली साहित्यमे कथाकार आ सम्पादकक रूपमे प्रसिद्ध छथि। 'अतीत' सँ पूर्व 1957 मे हिनक प्रथम कथा संग्रह 'रेखाचित्र' प्रकाशित भेल। एहिमे छोट पैघ पन्द्रह गोट कथाक संकलन अछि। ओहि हिनक 'यात्रा', 'माधवजी' सदृश प्रसिद्ध कथाक संग्रह एहिमे कएल गेल अछि। मानवीय संवेदना कें स्पष्ट करैत ओकर आन्तरिक उद्भावना के जाहि रूपें उमानाथ झा 'रेखाचित्र' मे आनलनि अछि, से हिनका 'अतीतक कथाकार' सँ ओहो सिद्ध करैत अछि।

(डॉ० भीमनाथ झा, शिक्षा-चेतना समिति)

Date: / /

एकर अतिरिक्त हिनक तीन गोट संपादित कृति सेहो उपलब्ध होइत अछि। जाहिमे इन्द्र धनुष (1967) पूर्वांचलीय भाषा साहित्य एवं संस्कृति (1972) आ विद्यापति गीतशती (1972) प्रमुख अछि। 'पूर्वांचलीय भाषा साहित्य एवं संस्कृति' आलोच्य पाठक संकलन थिक, जाहिमे पूर्वांचलीय भाषा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अवलोकन उल्लेख भेल अछि। तहिना 'विद्यापति गीत-शती' साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली सँ प्रकाशित अछि, जाहिमे विद्यापतिक प्रमुख काव्य रचनाक संकलन विभिन्न स्रोतक आधार पर कएल गेल अछि।

हिनक 'अतीत' कथा संग्रह : कथावस्तु, रचनाशिल्प तथा अभिव्यक्ति-कौशलक दृष्टिकोण सँ श्रेष्ठ रचना मानल गेल अछि। एहिमे तेरह गोट कथाक संकलन थिक। ई कथा संग्रह हिनक चारित्रिक विशेषताक अनुकूल पश्चिमी विचारधारा सँ प्रभावित बुझि पड़ैत अछि। खास लोकनिकेँ एहि कथा संग्रहक प्रसंग आओर बेसी जानबाक लेल पोथीमे उल्लिखित लेखकीय विचार अवश्य पढ़बाक चाही। जाहिमे कथाकार कहैत छथि जे —" मिथिलामे परिवर्तनक गति सदैव मन्द रहल अछि। तेँ मैथिली साहित्यहुमे आन्य भारतीय साहित्यक अपेक्षा बादमे आधुनिकता आएल। मैथिली साहित्य पर अँग्रेजी साहित्यक प्रभाव ओहि समय पड़ए लागल जखन अंग्रेजक भारत छोड़ब निश्चित प्राय भऽ गेल रहय। वर्तमान शताब्दीक चालिस दशकमे जखन एहि पंक्तिक लेखक लघुकथा लिखय लागलाह तँ आधुनिकताक अनुसंधानमे योरोपीय विशेषतः अँग्रेजी साहित्य सँ प्रेरित भेलाह। ~~[illegible]~~ यद्यपि उमानाथ झाक 'अतीत' पाश्चात्य साहित्यक प्रभावमे लिखल गेल हो किन्तु एहिमे वर्णित अछि भारतीय समाजक उद्वेलित

Scanned with CamScanner

मानसिक ~~स्थि~~ स्थितिक, ओकर तनाव, जीवन मे समाधानक समस्या आदिक। कथा सभमे प्रेमक उद्दीपन सेहो भेटि जाइत अछि। एहि कथा संग्रहक प्रसंग पं० गोविन्द झा लिखैत छथि - 'अतीतक मुख्य आकर्षण अछि एकर शिल्प ओ रंगहीन काव्य ओ कथामे नवीनता आ फुर्तीलता कदाचिते भेटत। अधिकांश कथा मिथुनीय प्रेम पर अछि, ~~आदि~~ ताहुमे तृतीय शालीनता आ भीरुतावश भोग सँ वंचित वा अकारण आशंकाक पात्र रहैत अछि।

अतीतक सभ कथा रचयमे विशिष्ट अछि एहि तथ्य कें एकर सभ कथाक फराक-फराक मूल्यांकन द्वारा स्पष्ट कयल जा सकैत अछि। आगिला व्याख्यान सँ अहाँ लोकनि कें प्रत्येक कथाक फराक-फराक कथावस्तु सँ ~~कें~~ परिचय कराएब।

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि व्याख्याता
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय,
राजनगर, मधुबनी